IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

किशोरो की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

* प्रवीण सिह

* शोधार्थी-कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म०प्र०)

Abstract- किशोरावस्था को एक प्रकार से शैशवकाल की ही पुनरावृत्ति माना जा सकता है। क्योकि इस अवस्था में भी शैशवावस्था की तरह बच्चे के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का अत्यधिक गति से वृद्धि और विकास होता है। किशोर संवेगात्मक रूप से पर्याप्त विकसित हो जाते है चिंता, भय, प्रेम ईर्ष्या और क्रोध आदि सभी संवेग अपने विकास के शिखर पर पहुंच जाते हैं। प्रस्तुत शोध किशोरो की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना, शोध का मुख्य उद्देश्य किशोर बालक एवं बालिकाओं की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना था शोधार्थी द्वारा मध्य प्रदेश के बालाघाट क्षेत्र के किशोरों का लिंग के आधार पर चयन किया गया स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया शोध के निष्कर्ष से किशोर बालक एवं बालिकाओं की जीवन शैली पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रस्तावना-

मानव जीवन की विकास यात्रा में किशोरावस्था का विशेष महत्व है किशोरो की इस अवस्था में आन्तरिक एवं बाहरी परिवर्तन होते हैं जिनके कारण उनके जीवन में हलचल मची रहती है शारीरिक परिवर्तन संबंधी उलझनें उन्हे विचलित करती रहती है। इस अवस्था मे बुद्धि अपनी चरम सीमा तक पहुंचने का प्रयत्न करती है तथा तार्किक चिन्तन, सूक्ष्म और गहन विचार शक्ति आदि सभी मानसिक शक्तियाँ पर्याप्त विकसित हो जाती है नैतिक मूल्यों और मान्यताओ का विकास भी किशोरावस्था की देन माना जा सकता है। यह अवस्था सामाजिक संबंधों को अधिक विकसित करने की अवस्था है. संवेगात्मक रूप से इस अवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

अध्ययन की आवश्यकता-

किशोरावस्था की एक प्रकार शैशवकाल की ही पुनरावृत्ति माना जा सकता है क्योकि इस अवस्या में भी शैशवकाल की तरह बच्चे के व्यक्तित्व के सभी पहलुओ का अत्यधिक गति से वृद्धि और विकास होता है। यह वृद्धि और विकास का प्रभाव उनकी जीवन शैली पर भी पड़ता है। किशोर सामाजिक रूप से अपनी पहचान बनाने में प्रयासरत रहते हैं। आधुनिक युग के परिवेश में सामाजिक संसाधन उनकी मदद करते है सामाचार पत्र, पनिका, इण्टरनेट, फेसबुक, इस्टाग्राम यू-ट्यूब जैसे सोशल मीडिया के संसाधन इनके जीवन

पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो तरह के प्रभाव डालते है। माता-पिता, अध्यापक, मित्र आदि की भूमिका भी इनकी जीवन शैली को प्रभावित करती है प्रस्तुत शोध का उद्देश्य किशोरो की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव अध्ययन करना है, कि किस तरह से सोशल मीडिया किशोरवर्यों को प्रभावित करती है?

अध्ययन के उद्देश्य-

i- किशोर बालको की जीवन शैली एवं सोशल मीडिया के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
ii- किशोर बालिकाओं की जीवन शैली एवं सोशल मीडिया के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
iii- किशोर बालको और बालिकाओं की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना-

i- किशोर बालको की जीवनशैली एवं सोशल मीडिया के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।
ii- किशोर बालिकाओ की जीवन शैली एवं सोशल मीडिया के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।
iii- किशोर बालक एवं बालिकाओं को जीवन शैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

समस्या कथन- किशोरवयो की जीवनशैली पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण-

प्रयुक्त शोधपत्र में तकनीकी शब्दों को परिभाषित किया गया है।

किशोरवय- 13 वर्ष से लेकर 19 वर्षो के मध्य बालक और बालिकाओं को किशोरवय कहा जाता है।

जीवन शैली- प्रस्तुत शोध में जीवन शैली से तात्पर्य, किशोरों के रहन सहन, खान-पान, व्यवहार, आदि से लिया गया है।

सोशल मीडिया-

प्रस्तुत शोध में सोशल मीडिया से तात्पर्य डिजिटल प्रोद्यौगिकी है जो आभासी नेटवर्क और समुदायों के माध्यम से पाठ और दृश्य सहित विचारो और सूचनाओ को साझा करने की अनुमति देती है इसके अन्तगत Youtube, Tik Tok, Facebook, Whatsapp, Twitter, instragram आदि सम्मिलित होते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण-

i- नरूका एवं शर्मा (2018) ने सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव पर शोधकार्य किया. इन्होंने निष्कर्ष रूप में यह पाया कि युवा सोशल मीडिया पर अपनी निजी जिन्दगी खोलने लगा है साथ ही अन्य अप्रमाणित खबरों को भी सच मानने लगा है जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी उभर रहा है।
ii- शर्मा एवं जैन (2022) ने "सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन" पर शोध किया प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्यक्न करना था न्यादर्श के रूप मे २०० छात्र-

छात्राओं का चयन याहृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया, शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि मे वृद्धि पायी गयी।

सीमांकन-

i- प्रस्तुत शोध में किशोर बालक एवं बालिकाओं को सम्मिलित किया गया।

ii- प्रस्तुत शोध में बालाघाट क्षेत्र (म०प्र०) के किशोरों को सम्मिलित किया गया।

शोधविधि- प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसख्या- प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश के वालाघाट क्षेत्र के किशोरवयों को अध्ययन मे शामिल किया गया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत शोध में बालाघाट क्षेत्र के 180 किशोरों को लिंग के आधार पर यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा सम्मिलित किया गया है।

सारणी क्रमाक 1.0

क्रम स०	सख्या	किशोर बालक	किशोर बालिका
1	180	90	90

उपकरण-

प्रस्तुत शोध मे किशोरो की जीवन शैली पर सोशल मीडियां के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग आकडो के संग्रह हेतु किया गया है।

निष्कर्ष- प्रस्तुत शोध में आकड़ों का साख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये

i- किशोर बालको की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

ii- किशोर बालिकाओ की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

iii- किशोर बालको एवं बालिकाओ की जीवन शैली पर सोशल मीडिया के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया बालिकाओ की अपेक्षा बालकों की जीवन शैली पर सोशल मीडिया का प्रभाव उच्च स्तर पर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i- मंगल एस० के० शिक्षा मनोविज्ञान (२०१०) पी०एच० आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड नयी दिल्ली 11001

ii- सिंह अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसीदास 41 यू. ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर दिल्ली 110007

iii- https://www.investopedia.com

iv- www.ijert.org.

v- Shodh Samagam ISSN 2581-6918(online), 2582-1792(Print)